बौद्ध-दर्शन

प्रथम आर्य सत्य (First Noble Truths)
(संसार दुःखमय है).

महात्मा बुद्ध की शिक्षा उनके चार आर्य सत्यों में की गई है—
(1) प्रथम आर्य सत्य को दुःख आर्य सत्य भी कहते हैं। इस आर्य सत्य का अर्थ है कि संसार के जितने सभी प्राणी दुःखी हैं। मनुष्य को जन्म, बुढ़ापा, रोग, मृत्यु आदि होते ही हैं और जो मनुष्य अपने को अधिक सुखी मानता है, उसे भी इस बात का दुःख है कि वह एक दिन मर जायेगा। अतः संसार में जो सुख मालूम पड़ता है वह कुछ ही समय के लिए है और बाद में वह दुःख में परिवर्तित हो जाता है। संसार की सभी वस्तुएँ क्षणिक हैं और जीवन के सभी का अन्त में मृत्यु में बदल जाते हैं और सभी सुखों का अन्त दुःख में ही मिलता है। इस व्यापक दुःख को बुद्ध अपने प्रथम आर्य सत्य में बतलाते हैं।

द्वितीय आर्य सत्य
(Second Noble Truth)
(दुःख का कारण)

V.V.I

बौद्ध-दर्शन के द्वितीय आर्य-सत्य की विवेचना कीजिए।
Discuss the second Noble Truth of ~~बौद्ध~~ Bodhism. Or,
Explain the twelve links of suffering according ~~to~~ to the Budha.
बुद्ध के अनुसार द्वादश निदान की व्याख्या करें
Or,
Explain prodsnidam or Prattityasamutpada acosing to Budhism.
बौद्ध दर्शन के द्वादश निदान या प्रतीत्यसमुत्पाद की व्याख्या करें। Or,

बौद्ध दर्शन के वर्णित दुखों की पूर्ण व्याख्या करें।

Ans- द्वितीय आर्य सत्य में भी दुःख का कारण बतलाया गया है। संसार में कोई भी विषय बिना कारण का नहीं होता है। किसी चीज के होने पर ही कोई दूसरी चीज होती है। इस सिद्धांत को 'प्रतीत्यसमुत्पाद' कहते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार दुःख का भी कारण अवश्य होगा। जीवन में जितने भी दुःख हैं उन्हें हम सांकेतिक रूप में "जरामरण" कहते हैं।

इस दुःख (जरामरण) का क्या कारण है? बुद्ध के अनुसार जन्म ग्रहण करना ही 'जरामरण' का कारण है। जिसका जन्म नहीं होता उसका जरा या मरण आदि दुःख नहीं होगा। जन्म ग्रहण को 'जाति' कहते हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार इस जाति का भी कारण होना ही चाहिए। जाति के कारण को "भव" कहते हैं। "भव" का अर्थ है जन्म लेने की प्रवृत्ति। इस भव के कारण को 'उपादान कारण' कहा जाता है। अतः संसार के वस्तु से लिपटे रहने की जो हमारी अभिलाषा है, उसे उपादान का कारण है 'तृष्णा' बतलाया गया है। तृष्णा का अर्थ संसार के वस्तुओं को भोगने की वासना। किन्तु इस तृष्णा का भी कारण होना चाहिए और तृष्णा का कारण वेदना को कहा गया है। 'वेदना' का अर्थ इन्द्रियों के द्वारा विषय भोग करने में हमें जो सुख की अनुभूति होती है उसे 'वेदना' कहते हैं। इस वेदना का कारण इन्द्रियविषय और इन्द्रिय का स्पर्श है। यदि इन्द्रिय से विषय के साथ स्पर्श नहीं हो तो वेदना संभव नहीं है। अतः वेदना के लिए इन्द्रियों का

विषयों के साथ सम्पर्क आवश्यक है। इसी सम्पर्क को 'स्पर्श' कहते हैं। स्पर्श का कारण षडायतन को कहते हैं। पाँच इन्द्रिय और मन इन छः के समूह को 'षडायतन' कहा जाता है। यदि हमारे इन्द्रिय नहीं हो तो हमें इन विषयों के साथ सम्पर्क नहीं हो सकेगा। इसलिए षडायतन के बिना स्पर्श सम्भव नहीं होगा। षडायतन का कारण नामरूप है। 'नामरूप' कहते हैं गर्भ के अन्तर्गत रूपी शरीर और मन को। इस नामरूप का कारण विज्ञान बतलाया गया है। 'विज्ञान' का अर्थ यहाँ पर चेतना बतलाया गया है। इस विज्ञान का कारण पहला जन्म का संस्कार है। पहले जन्म की पहली अवस्था में मनुष्य के इस जन्म के सभी कर्मों का प्रभाव रहता है। इसी प्रभाव को हम 'संस्कार' कहते हैं। इसी संस्कार के कारण विज्ञान (चेतना) होता है। इस संस्कार का भी कारण होना चाहिए और बुद्ध ने अविद्या को संस्कार का कारण बतलाया। जो क्षणिक है और दुःखद है उसे स्थायी और सुखद मान लेना 'अविद्या' है। इसी को हम Ignorance कहते हैं। इसी अविद्या के कारण संस्कार विज्ञान को जन्म देते हैं। विज्ञान से नामरूप की उत्पत्ति होती है, षडायतन के कारण स्पर्श होता है और स्पर्श ~~के कारण~~ से वेदना होता है, वेदना के कारण तृष्णा, तृष्णा से उपादान होता है, उपादान से भव की उत्पत्ति होती है और भव से जन्म होता है और जन्म होने से जरामरण आदि दुःख होता है। दुःख से लेकर अविद्या तक बारह कड़ियाँ हैं जो दुःख के कारण के रूप में द्वितीय आर्य सत्य में बतलायी गई हैं इसलिए इसे द्वादश निदान यानि Twelve causes कहते हैं।

[illegible] करते हैं।

द्वितीय आर्य सत्य
(Second Noble Truth)

द्वादश निदान

(1) दुःख (जरामरण) (suffering)
(2) जाति (Rebirth)
(3) भव (The will to be born)
(4) उपादान (Mental clinging)
(5) तृष्णा (Craving)
(6) वेदना (Sense - experience)
(7) स्पर्श (Sense contact
(8) षडायतन (Six sense organs)
(9) नामरूप (Mind body organism)
(10) विज्ञान (Consciousness)
(11) संस्कार (Impressions)
(12) अविद्या (Ignorance)

तृतीय आर्य सत्य
(Third Noble Truth)

(दुःख निरोध या निर्वाण)

तृतीय आर्य सत्य में बुद्ध ने यह बतलाया है कि दुःख का अन्त हो सकता है। दुःख के अन्त होने को निर्वाण या दुःख निरोध कहते हैं। तृतीय आर्य सत्य को तीसरे आर्य सत्य में इसी निर्वाण की व्याख्या की गई है। निर्वाण शब्द का अर्थ बुझा हुआ होता है जैसे - दीपक का बुझ जाना उसी तरह जीवों के दुःख का ठंडा जाना। निर्वाण का तात्पर्य है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि जीवन के नाश को है

निर्वाण कहा जाता है क्योंकि महात्मा बुद्ध ने इसी जीवन में निर्वाण को प्राप्त किया था। वास्तव में तृष्णा का अंत या राग - द्वेष या मोह के अंत को ही निर्वाण कहते हैं और जीवन काल में जिस आदमी ने अपनी ~~विजय~~ विजय तृष्णा पर प्राप्त कर लिया हो तो इस तरह वह सर्वज्ञ मुक्त हो जाता है। ऐसे लोगों को बौद्ध दर्शन में अर्हत् कहा जाता है। जीवन काल में जो निर्वाण प्राप्त होता है इसे जीवन्मुक्ति कहते हैं। बौद्ध दर्शन में निर्वाण का अर्थ अकर्मण्यता नहीं माना गया। निर्वाण प्राप्ति के बाद भी बुद्ध घूम-घूम कर अपने उपदेशों से लोगों का उपकार करते रहे लेकिन ऐसे कर्म से पुनर्जन्म नहीं होता क्योंकि निर्वाण प्राप्त जो आदमी से किये जाते हैं, वे राग, द्वेष से रहित होने के कारण जन्म ग्रहण करना ही पड़ता है। ऐसे अनासक्त कर्म से पुनर्जन्म की सम्भावना नहीं रहती। जो काम हम लोग राग, द्वेष और मोह से प्रेरित होकर करते हैं सिर्फ इन्हीं से ही पुनर्जन्म होता है। किन्तु जो काम बिना राग, द्वेष से ~~किये~~ किये जाते हैं। इनमें पुनर्जन्म नहीं होता है। साधारण बीज से पौधे की उत्पत्ति होती है किन्तु जिस बीज को आग में ~~भूँज~~ भूँज दिया जाता है इस भूँजे हुए बीज को बोने से पौधे की उत्पत्ति नहीं होती है।

निर्वाण प्राप्ति के बाद मनुष्य इस जीवन में भी पूर्ण शान्ति को प्राप्त करता है और मृत्यु के बाद इसे पुनर्जन्म का भय नहीं रहता है। इस प्रकार वह सदा के लिए दुःख से छुटकारा

जा सकता है। बौद्ध-दर्शन के अनुसार निर्वाण अवस्था का वर्णन करना सम्भव नहीं है, इसलिए इसे वर्णनातीत कहा जाता है क्योंकि हम जितनी भी कल्पना करते हैं, वे राग, द्वेष आदि से इतर नहीं होती।

निर्वाण का ज्ञान सिर्फ अनुभव से होता ही हो सकता है। जिस प्रकार किसी अंधे को रंग का ज्ञान बिना अनुभव से दिया नहीं जा सकता इसी प्रकार निर्वाण की स्थिति है।

चतुर्थ आर्य सत्य!

Imp

Q. बौद्ध दर्शन के अनुसार निर्वाण प्राप्ति के अष्टांग-मार्ग का व्याख्या करें।

Explain the Eight fold Path of ~~Budd~~ Obtaning Nirvan according to Buddhism? Or,

बौद्ध-दर्शन के चतुर्थ आर्य सत्य की व्याख्या करें। Or

बौद्ध-दर्शन के अष्टांगिक मार्ग की व्याख्या करें।

बौद्ध दर्शन के दुःख निरोध मार्ग की व्याख्या करें।

Ans- चतुर्थ आर्य सत्य या,

(दुःख निरोध मार्ग)-

इस चौथे आर्य सत्य को भगवान बुद्ध ने दुःख निरोध का मार्ग बतलाया है। बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति के जिस मार्ग को लोगों के सामने रखा इसके आठ अंग हैं इसलिए इस आठ अंग को अष्टांगिक मार्ग कहते हैं। ये आठ अंग निम्नलिखित है—

(1) सम्यक दृष्टि - (Right views).

~~अविद्या~~ अविद्या या अज्ञान के कारण हम लोग को जो दृष्टि रहती है वह गलत रहती है इसलिए इस दृष्टि को मिथ्या दृष्टि कहते हैं और हम अनित्य, दुःखद और अनात्म वस्तु ~~[illegible]~~ को नित्य और सुखद समझते हैं। निर्वाण पाने के लिए इस दृष्टि को छोड़ना होगा।

बौद्ध के अनुसार सभी वस्तुओं का वास्तविक स्वरूप, अनित्य, अनात्म और दुःखद है इसी दृष्टि को सम्यक् दृष्टि कहते हैं। इस दृष्टि के अन्दर चार प्रकार के आर्य सत्यों का ज्ञान होना जरूरी है।

(ii) सम्यक् संकल्प — (Right Resolve) -

बुद्ध ने बतलाया है कि केवल ज्ञान से ही काम नहीं होगा जबतक हम उसके ज्ञान के मुताबिक अपने जीवन को सुधारने का संकल्प नहीं करते तबतक निर्वाण प्राप्ति नहीं हो सकता। सुधार करने का लक्ष्य पूर्ण नहीं हो सकता। व्यक्ति लोगों का चाहिए कि वे इस प्रकार के द्वेष, हिंसा ~~संकल्प करें और को सम्यक् संकल्प कहते हैं।~~ के विचारों को त्याग करने का दृढ़ संकल्प करें इसी को सम्यक् संकल्प कहते हैं।

(iii) सम्यक् वाक् (Right Speech) -

सम्यक् वाक् ~~[illegible]~~ सिर्फ हमारी मानसिक दृढ़ता को ~~[illegible]~~ कार्यरूप में सविधान वचन द्वारा पालन करते हैं। झूठ नहीं बोलना, निंदा, अप्रिय वचन, वाचालता आदि से बचना सम्यक् वाक् के अन्दर आता है।

(iv) सम्यक् कर्मान्त (Right Actions) -

~~[illegible]~~ सम्यक् वचन के बाद हमें अपने वस्य कर्मों में भी संयम रखना चाहिए। अहिंसा, चोरी नहीं करना सम्यक् कर्मान्त कहे जाते हैं।

(v) सम्यक् आजीविका (Right Livelihood) -

इसका तात्पर्य है कि हमें सही उपाय से अपने जीवन को चलाना चाहिए। जीवन का निर्वाह करने के लिए ~~[illegible]~~ निषिद्ध मार्ग को छोड़कर ~~[illegible]~~ उचित ~~[illegible]~~ मार्ग का वर्जन करके अपने सम्यक् संकल्प को सुदृढ़ करना चाहिए। जैसे - विष बेचना, हत्या करना इत्यादि पाप कर्म है।

(vi) सम्यक व्यायाम :- (Right Efforts) :-

जो आदमी सही मार्ग पर चलता रहता है वो भी कभी-कभी इस मार्ग को छोड़कर गलत मार्ग धारण कर लेता है। कारण यह है कि हमारे जीवन में कुछ बुरे संस्कार जमाये रहते हैं जो मौका पाकर हमारे भावों को प्रभावित करता है। इसके लिए बुद्ध ने मन में चार प्रकार का प्रयत्न करने का आदेश दिया।

(क) पुराने बुरे भावों को पूरी तरह नाश करना।

(ख) नये बुरे भावों को मन में नही आने देना।

(ग) अच्छे-अच्छे विचारों को मन में आने देना।

(घ) आये हुए अच्छे विचारों को मन से बाहर नहीं जाने देना।

इन चार प्रकार के प्रयत्नों को बौद्ध-दर्शन में सम्यक व्यायाम कहा गया है।

(vii) सम्यक स्मृति - (Right Mindfulness) -

इसका तात्पर्य यह है कि वस्तुओं का जो सही ज्ञान हो चुका है। उसको उसी रूप में स्मरण रखें। जैसे - हमें शरीर को हमेशा शरीर समझना चाहिए। "यह मैं हूँ" या "यह मेरा है।" सुनने में यह सिद्धांत वास्तव में कठिन लगता है, यदि शरीर को कुछ हो जाता है तो मानसिक पीड़ा होती है। ऐसा समझते हैं कि हमारा शरीर नष्ट हो गया यानि इस शरीर के मान जो आसक्ति है उसी के चलते हमें इस प्रकार का कष्ट होता है। सम्यक स्मृति इस बात को याद रखती है। वास्तव में शरीर क्षण-क्षण में नष्ट होनेवाला है तो इसके नाश होने से हमें कोई दुख नही होना चाहिए। शरीर की क्षणभंगुरता को याद रखना सम्यक स्मृति कहलाता है।

(viii) सम्यक् समाधि :- (Right concentration)-

ऊपर के सात अंगों के पालन करने पर मनुष्य को अपनी चित्तवृत्तियों को केन्द्रित करने में सहायता मिलती है और जब चित्तवृत्ति शुद्ध हो जाती है, तब उसे सम्यक् समाधि की अवस्था प्राप्त होती है। समाधि की पहली अवस्था मे विचार और तर्क मौजूद रहता है तथा आनन्द और शान्ति का अनुभव होता है। समाधि की दूसरी अवस्था के विचार और चिंतन नहीं होते हैं, क्योंकि इस अवस्था मे संदेह दूर हो जाता है। इस अवस्था में शांति और आनन्द का अनुभव होता है। समाधि की तीसरी अवस्थाओं में विचार और चिंतन तो नहीं रहते इसमें एक प्रकार का दैहिक सुख का भान रहता है, क्योंकि समाधि ने आनन्द के बारे में चित्त उदासीन रहता है। समाधि की चौथी अवस्था समता की अवस्था है। इस अवस्था मे दैहिक सुख का सुध भी ध्यान नहीं रहता है। चित्तवृत्ति बिल्कुल निरोध हो जाती है। यह अवस्था सुख और दुःख से रहित है। यह निर्वाण की अवस्था या अर्हत की अवस्था कही जाती है। यह प्रज्ञा की अवस्था भी है।

बुद्ध के अष्टांगिक मार्ग का बौद्ध-दर्शन मे महत्व है इस मार्ग मे आठ गुण बतलाये गये हैं लेकिन इस मार्ग को तीन हिस्सों मे बाँट सकते हैं और इसे शील, समाधि, प्रज्ञा कहा जाता है। शील का तात्पर्य है अपने ~~आचरण~~ आचार-विचार, रहन-सहन आदि को आधार बनाना। जब शुद्ध आचरण से कारण मनुष्य का चित्त निर्मल हो जाता है तब समाधि की अवस्था शुरु हो जाती है समाधि की अवस्था मे चित्त बिल्कुल एकाग्र

होकर वस्तुओं के स्वाभाविक स्वरूप को ही विचारना है और इस प्रकार के समाधि करते - करते जब वास्तविकता का ज्ञान हो जाता है तब प्रज्ञा की कल्पना प्राप्त हो जाती है। यही सही ज्ञान की कल्पना इसी कल्पना को निर्वाण भी कहा करते है।